दृढ़ इच्छा की शक्ति

मीनाक्षी गिरधर

उत्साह एवं प्रेरणा को व्यक्ति प्रशंसा से भी जाग्रत करता है और किया गया अपमान भी व्यक्ति को कुछ कर गुजरने का विचार देता है। सामान्य जिंदगी में इस प्रकार के हजारों विचार व्यक्ति के दिलोदिमाग में आते हैं। लेकिन उन विचारों का आना-जाना वैसे ही होता है जैसे व्यक्ति सांस लेता है। लेकिन कई बार ऐसा भी होता है कि व्यक्ति उन्हीं विचारों में से किसी एक विचार पर दृढ़ हो जाता है और उसे पूरा करने की बात अपने हृदय में ठान लेता है। उसका यही मंजबूत इरादा बाद में उसकी शक्ति भी बन जाता है। स्वामी रामतीर्थ की जिंदगी का निम्न उदाहरण यही शिक्षा देता है कि व्यक्ति जब किसी विचार पर दृढ़ हो जाता है तो वह उसकी शक्ति बन जाता है :

'तुम्हें शर्म आनी चाहिए कि ब्राह्मण होकर फारसी की शिक्षा ग्रहण करते हो। अरे! तुम्हें तो संस्कृत का अधिष्ठाता विद्वान होना चाहिए।' उसके सहपाठी ने उसे लताड़ा। लाहौर कॉलेज के स्नातक छात्र को सहपाठी की यह बात भीतर तक चुभ गई। उसने उसी समय प्रण किया कि वह संस्कृत भाषा की शिक्षा अवश्य ग्रहण करेगा। अगले दिन वह संस्कृत के शिक्षक के पास गया और उनसे संस्कृत सीखकर उसकी परीक्षा देने की इच्छा व्यक्त की। शिक्षक उसकी बात सुनकर पहले तो हंसे और फिर बोले—'बेटे! जब तुम्हें संस्कृत का रत्तीमात्र भी ज्ञान नहीं है, तब तुम स्नातक में संस्कृत की परीक्षा हेतु फार्म कैसे भर सकते हो?' यह सुनने के बावजूद वह छात्र निराश नहीं हुआ, बल्कि उसने मन में ठान लिया कि संस्कृत तो वह सीखकर ही रहेगा।

उसने अपनी संपूर्ण ऊर्जा उसमें लगा दी। दिन-रात दिमाग में एक ही बात को दृढ़ किया कि अपनी योग्यता को सिद्ध करना है। चाह हो तो राह अपने आप मिल जाती है। साथियों ने और शिक्षकों ने सहयोग दिया और इस प्रकार वह छात्र अपने उद्देश्य में सफल हो गया। तीन-चार माह बाद वह पुन: संस्कृत के शिक्षक के पास पहुंचा और परीक्षा देने के संबंध में प्रार्थना की। शिक्षक ने उसकी परीक्षा ली और वह सफल रहा। प्रण का पक्का वह छात्र आगे चलकर स्वामी रामतीर्थ के नाम से विख्यात हुआ। उन्होंने स्नातक परीक्षा में विश्वविद्यालय में शीर्ष स्थान प्राप्त किया। कथा इंगित करती है कि यदि मन में कुछ कर गुजरने की लगन हो तो असंभव दिखने वाले कार्य भी संभव हो जाते हैं । दृढ़ इच्छाशक्ति के समक्ष समस्त विपरीतताएं ध्वस्त हो जाती हैं और मार्ग के शूल भी फूल बन जाते हैं।

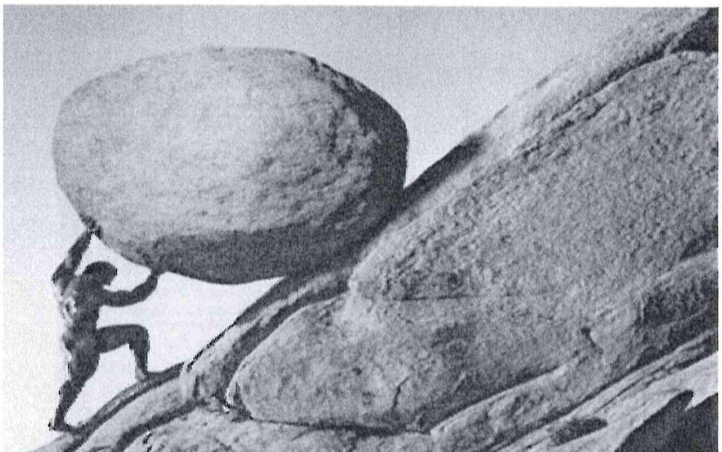

आपके जीवन में भी कभी अपमान एवं तिरस्कार की पीड़ा ने इसी प्रकार के विचार को जन्म अवश्य ही दिया होगा। लेकिन आप उस विचार को आवश्यक पोषण एवं संरक्षण नहीं दे पाए होंगे और इसी कारण आप विचार को अपनी शक्ति नहीं बना पाए। प्राय: हम अपनी कमजोरियों के साथ ही अपना जीवन गुजारते रहते हैं और बदलाव को स्वीकार नहीं करते हैं। हम बदलाव के भविष्य को लेकर सुरक्षित महसूस नहीं करते हैं और चल रही समस्या से अपने आपको खुश रखते हैं। लेकिन हमें स्वयं में शक्ति जाग्रत करनी होगी, तभी हम अपने उन महान विचारों की रक्षा कर सकेंगे, जो हमें उत्साहित करते हैं। आपने पक्षियों को उड़ने की तैयारी के समय अवश्य ही देखा होगा। उड़ने की इच्छाशक्ति के साथ उनके पंख और उनके जिस्म का रोम-रोम उड़ने की प्रक्रिया में एक साथ सहभागिता करता है और परिणाम होता है कि पक्षी धरातलीय गुरुत्वाकर्षण से स्वयं को आजाद कर लेता है।

सुबह जल्दी उठने की बात हो, तब भी आपने देखा होगा कि जो बिस्तर एकदम से त्याग देते हैं, वही उठ पाते हैं, जबकि ज्यादातर लोग आलस्य की गोद में पड़े रहकर यही सोचते रह जाते हैं कि बस अभी उठ जाता हूं और फिर वह लंबे समय तक सोते ही रह जाते हैं। अत: जब जागृति का विचार आए तो आलस्य से मुक्त होने का उसी समय प्रयास करें, आपको अवश्य सफलता मिलेगी। जिस प्रकार जिंदगी में उपयुक्त मौके बार-बार प्राप्त नहीं होते हैं, वैसे ही आपकी अंतर्मन की शक्ति भी आपको बार-बार प्रेरणा नहीं देगी, पहचानिए और जानिए उसे।